संस्था का परिचय

अगर इंसान अपने विकारों से मुक्ति पाकर अपने अन्दर मानवीय गुणों का समावेश कर ले तो नकारात्मक विचार जीवन से दूर हो जाते है। मगर इस लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जाए यही संदेश दिया प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के प्रणेता दादा लेखराज ने।

माउण्ट आबू के इन पहाड़ों में ऐसी खुशबू बसी है कि दुनियां भर से लाखों लोग बरबस ही यहाँ खीचें चले आते हैं। लेकिन कारण सिर्फ मरूभूमि राजस्थान की अरावली की पहाड़ियों की रंगीन फिजा ही नहीं है बल्कि यहाँ की वो आध्यात्मिक शान्ति है जिसका उदगम स्थल है, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। जो पिछले 7 दशक से देश-विदेश के लाखों लोगों को सिखाता है जिन्दगी जीने की कला। (इन्टरव्यू सुमन बहन)

इस विश्व विद्यालय के तीन मकसद है- राजयोग से व्यक्ति का विकास, आत्मा का परमात्मा से मिलन और आध्यात्म से विश्व शान्ति का संदेश और ये संदेश जाति, धर्म और देश की सीमाओं को लांघ चुका है। अध्यात्म की इस सुन्दर परम्परा की शुरूआत हुई करांची में सन् 1936 में। जब साठ साल के दादा लेखराज को सांसारिक बन्धनों को तोड़ने और परमात्मा के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का ईश्वरीय संदेश प्राप्त हुआ। इस पर अमल करते हुए सन् 1937 में एक ट्रस्ट की नींव रखी गयी और दादा ने अपनी सारी सम्पत्ति इस ट्रस्ट के नाम कर दी। इस ट्रस्ट में महिलाओं यानि माताओं और बहनों की ही भूमिका पर जोर दिया गया। वो परम्परा आज भी कायम है और दादी प्रकाशमणि जी इस आध्यात्मिक मिशन की अग्रदूत और मुख्य प्रशासिका है।

जगत नियंता परमपिता परमात्मा शिव ने दादा लेखराज को प्रजापिता ब्रह्मा के अलौकिक उपाधि से विभूषित किया। मान्यता के मुताबिक उनके जन्म को ब्रह्मा की वाणी से उच्चारित महावाक्यों से हुए पुनर्जन्म की संज्ञा दी गयी। (दादीजी का स्क्रीप्ट) सन् 1950 में दादा लेखराज करांची से आबू आये यहाँ उन्होंने ओम् शान्ति के नाद के साथ आध्यात्मिकता की जो ज्योति जगाई इससे कईयों के जीवन में नई रोशनी मिली। आज भी दुनियां के 120 से अधिक देशों में लाखों लोगों की जिन्दगी में बदलाव आ रहा है। आज इस संस्था से जुड़े लोगों को ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी के नाम से जाना जाता है और इस संस्था को जाना गया प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नाम से।

इस आध्यात्मिक संस्था का प्रमुख लक्ष्य है पांच विकारों से मुक्ति पाना (दादी जानकी जी का

इन्टरव्यू) ब्रह्माकुमारीज संस्था के पूरे विश्व के केन्द्रों में 10 लाख विद्यार्थी हर रोज नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा लेते है और राजयोग का अभ्यास करते है (दादी जानकी जी का इन्टरव्यू) इस संस्था का सक्रिय सदस्य बनने से पहले मन के तमाम विकारों पर विजय प्राप्त करने के लिए नम्रता, सहनशीलता, धैर्य, संतोष, मधुरता जैसे दिव्य गुणों को अपने जीवन में उतारने का अभ्यास करना होता है। (इन्टरव्यू डेनिश बहन और माईक भाई) प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शिक्षा का मूल है राजयोग की शिक्षा जो पश्चिमी देशों के विदेशियों के लिए कौतूहल और आकर्षण का विषय है।

संस्था यही संदेश देती है कि निराकार परमात्मा शिव ही विश्व की सारी आत्माओं के माता भी है और पिता भी। हर पल उसी परमात्मा के प्रति प्रेम में डूबे रहना ही राजयोग है। 'राजयोग' एक ऐसी चमत्कारिक विद्या है जिसमें पारंगत होने पर मानसिक तनावों से तो मुक्ति मिलती ही है, नकारात्मक विचार भी दूर हो जाते है। और तभी होता है व्यक्ति का सच्चा आध्यात्मिक उत्थान (दादी जानकी का इन्टरव्यू) राजयोग के सिद्धांत और अभ्यास का असर यहाँ के परिवेश में साफ नजर आता है। यहाँ से जुड़े हर व्यक्ति के रोजमर्रा के क्रिया कलापों में राजयोग की छाया साफ दिखाई देती है। फिर चाहे वो संस्था की व्यवस्था से जुड़ा कोई काम हो या फिर रसोईघर का राजयोग ही यहाँ की जीवन प्रणाली को संचालित करने वाली शक्ति है। 70 साल पहले आध्यात्मिक क्रान्ति की शक्ल में जो बीज बोया गया वो आज एक विशाल आध्यात्मिक वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। जिसकी शीतल और अलौकिक छाओं में दुनियां के तमाम मुल्कों के असंख्य लोग अपने जीवन के वास्तविक अर्थ को समझते है। सीधे-सादे शब्दों में जिन्दगी के तमाम सुर्खियों का जो आसान हल यहाँ सिखाया जाता है शायद यही कारण है कि आज इस संस्था को पूरी दुनियां में इस सम्मान की नजर से देखा जाता है। इस संस्था के मानवीय सेवाओं को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1985 में 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दूत' पुरस्कार से सम्मानित किया।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com